E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(10): 27-30
Received: 19-08-2023
Accepted: 21-09-2023

राजभान जायसवाल
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी
प्राचार्य, ज्योत्सना शिक्षा महाविद्यालय, सीधी, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
राजभान जायसवाल
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सीधी जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

राजभान जायसवाल, डॉ. संतोष कुमार द्विवेदी

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i10a.1064

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र सीधी जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी जिले के सभी विकासखण्डों से 16–16 विद्यालय अर्थात कुल 80 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विकासखण्ड से 256 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1280 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है। परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर हैं, जबकि अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति वर्ग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

कुटशब्दः सीधी जिला, माध्यमिक स्तर, अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि

1. प्रस्तावना
शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के समुचित विकास के लिये शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके उनमें ज्ञान, कौशल, अवबोध, अभिवृत्तियां, मूल्य एवं आत्म प्रत्यय आदि का समावेश करने का प्रयास करता है जिससे उसके नागरिक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सकें। इसके साथ–साथ शिक्षा समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शिक्षा समाज को विघटित करने वाले विभिन्न कारकों यथा ईर्ष्या, वैमनस्य, पक्षपात, निहित स्वार्स्थ, अंधविश्वास धर्मान्धता, रूढ़िवादिता आदि का खंडन करके समाज को एकीकृत एवं संगठित करने में भी मदद करती है।
अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) भारत में सबसे अधिक सामाजिक और शैक्षिक रूप से वंचित समूहों में से हैं। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक और आर्थिक अभाव का इतिहास अलग–अलग है, और उनके शैक्षिक हाशिये पर होने के अंतर्निहित कारण भी स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। हालॉकि, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के बीच शैक्षिक परिणामों की तुलना से एक सामान्य तस्वीर सामने आती है जिसे सरकार ने नीतिगत नुस्खों के एक सामान्य सेट के माध्यम से संबोधित करने की कोशिश की है।
अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की खराब शैक्षिक उपलब्धियों को गहराई से अंतर्निहित जाति और सामाजिक पदानुक्रम के संदर्भ में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है जो समुदाय, स्कूल और आर्थिक जीवन की रोजमर्रा की सामाजिक बातचीत में अधिनियमित और व्यक्त किए जाते हैं। पूर्व–औपनिवेशिक काल से कार्यात्मक, जाति व्यवस्था के बाहर नामित समुदायों के खिलाफ सामाजिक रूप से स्वीकृत भेदभाव और पूर्वाग्रह की प्रणाली ने एससी और एसटी समूहों के आत्म–मूल्य, सम्मान और आर्थिक जीवन पर दूरगामी प्रभाव डाला है। जैसे–जैसे हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर रहे हैं, जाति अब भारत में आर्थिक और सामाजिक संबंधों को व्यवस्थित करने का निश्चित तरीका नहीं रह गई है, लेकिन समुदायों के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक जीवन पर इसका स्थायी प्रभाव बना हुआ है। हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि जाति–आधारित भेदभाव अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति दोनों समूहों की कम शैक्षिक गतिशीलता में एक प्रभावशाली कारक बना हुआ है, बावजूद इसके कि सरकारी कार्यक्रम इन समुदायों के बच्चों को सहायता प्रदान करते हैं (सेकडा, 1989)[1]।
शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों के व्यवहार ने परिमार्जन एवं संशोधन किया जा सकता है। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्ति विभिन्न स्तरों के छात्रों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते है तथा इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं का आयोजन करते है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य इन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति से है। विद्यार्थियों ने शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर केन्द्रित किया गया है।

शैक्षिक उपलब्धि से आशय विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम के विषयों के ज्ञान के आंकलन से है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध विषय अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि का विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारकों यथा व्यक्तित्व, सामाजिक–आर्थिक स्तर, लिंग एवं विद्यालय में स्थिति से संबंधों की सार्थकता की पहचान करना है। अध्ययन से अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन किया गया है।

3. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

1. शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र सीधी जिला है। इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड – सीधी, सिहावल, कुसमी, मझौली एवं रायपुर नैकिन हैं। जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक विद्यालय जो मध्यप्रदेश शासन से मान्यता प्राप्त है, इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

समष्टि व प्रतिदर्शः प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के सभी विद्यार्थियों का अध्ययन किया जाना व्यवहारिक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। सीमित समय और सीमित व्यय में अधिक प्रयुक्त, त्रुटिहीन और विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए न्यादर्श का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सीधी जिले के सभी विकासखण्डों से 16–16 विद्यालय अर्थात कुल 80 विद्यालयों का चयन दैव निर्दशन पद्धति द्वारा अध्ययन किया गया है। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा यह सभी संस्थान शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित हों।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 08–08 छात्र एवं छात्राएं अर्थात कुल 1280 विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधिः** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधिः** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोध समस्या में उपकरणों का चुनाव शोध की परिकल्पना की प्रकृति पर निर्भर करती है। प्रत्येक उपकरण एक विशेष प्रकार के आंकड़े एकत्रित करने के लिए उपयुक्त होता है। आवश्यकता एवं सुविधा की दृष्टि से शुद्ध, वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीय आंकड़ों के संकलन के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली एवं अद्धवार्षिक परीक्षाफल के परिणामों के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010)[4], पाठक, पी.डी. (1998)[5], प्रसाद, गोमती (2004)[6], निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन (2016)[7], त्रिपाठी, डॉ. लोकेश (2014)[8] ने शोध विधि एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. शोध क्षेत्र का सामान्य परिचय

सीधी जिला म.प्र. की राजधानी भोपाल से उत्तर पूर्वी दिशा में सड़क मार्ग से 635 किलो मीटर दूर है तथा रीवा संभाग के मुख्यालय से दक्षिण पूर्व में 80 किलोमीटर पर जिला मुख्यालय स्थित है। जिला सीधी मूलतः पठारी व पर्वतीय प्रदेश है इसका विस्तार 23°47′ से 24°42′ उत्तरी अक्षांश तथा 81°18′ से 82°49′ पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है।[9]

जिला सीधी मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्व क्षेत्र में स्थित है। यह प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। इसके पूर्व में उत्तर प्रदेश का मिर्जापुर तथा सोनभद्र जिला, दक्षिण में छत्तीसगढ़ राज्य का कोरिया जिला पश्चिम में शहडोल तथा सतना जिला एवं उत्तर में रीवा जिला स्थित है। जिले की समुद्र तल से निम्नतम ऊँचाई 243.84 मी. तथा उच्चतम ऊँचाई 609.60 मी. है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 10526 वर्ग कि.मी. है। यह जिला पूर्व से पश्चिम 155 कि.मी. तथा उत्तर से दक्षिण 95 कि.मी. फैला हुआ है। क्षेत्रीयता की दृष्टि से यह जिला भारत के कुल भू–भाग का 0.37 प्रतिशत है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0-01 स्तर	0-05 स्तर	
1.	अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थी	640	60.56	0.78	2.58	1.96	82.8
2.	अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थी	640	54.41	1.71			

df = 1278

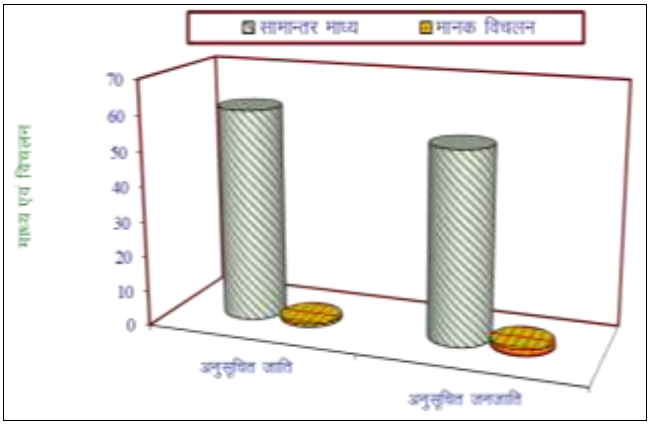

आरेख 1: शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का आरेखीय निरूपण

सारणी एवं आरेख क्रमांक 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 60.56 एवं 54.41 है। एवं प्रमाणिक विचलन क्रमशः 0.78 एवं 1.71 प्राप्त हुआ है। इनका *df* = 1278 है। गणना से प्राप्त 't' का मान 82.8 है, जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। अतः शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर हैं। अतः यह परिकल्पना निरसित होती है।

सारणी 2: शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0-01 स्तर	0-05 स्तर	
1.	छात्र	320	61.16	0.92	2.58	1.96	0.8
2.	छात्राएँ	320	61.09	0.99			

df = 638

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 61.16 एवं 61.09 है। तथा मानक विचलन (SD) क्रमशः 0.92 एवं 0.99 प्राप्त हुआ है। इनका df 638 है। गणना से 't' का मान 0.8 प्राप्त हुआ है। जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से कम है अत शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 सत्यापित होती है।

सारणी 3: शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्रमांक	समूह	N	M	SD	सारणी मूल्य		गणनीय 't' मूल्य
					0-01 स्तर	0-05 स्तर	
1.	छात्र	320	51.44	1.69	2.58	1.96	0.65
2.	छात्राएँ	320	51.53	1.67			

df = 638

उपरोक्त सारणी क्रमांक 3 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 51.44 एवं 51.53 है। तथा मानक विचलन (SD) क्रमशः 1.69 एवं 1.67 प्राप्त हुआ है। इनका df 638 है। गणना से 't' का मान 0.65 प्राप्त हुआ है। जो सारणी में दिए गए दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर मानक मान क्रमशः 1.96 एवं 2.58 से कम है अत शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 3 सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का स्तर उच्च पाया गया है और अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि निम्न हैं। अतः अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया है। अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और इसी प्रकार अनुसूचित जनजाति वर्ग छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

12. सन्दर्भ ग्रंथ

1. Secada WG. Educational Equity versus Equality of Education: An Alternative Conception. In Secada, W.G. (ed.), Equity in Education. New York: Falmer Press; c1989.
2. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989) : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
3. कपिल, एच.के. (1996) : सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
4. राय, पी. एवं राय, सी.पी. (2010) : अनुसंधान परिचय. आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल.
5. पाठक, पी.डी. (1998) : भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.
6. प्रसाद, गोमती (2004): ''रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की षैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन'' पी–एच.डी. (शिक्षा) अ.प्र.सिंह वि.वि. रीवा (म.प्र.)
7. निगम, श्रीमती अमलेन्दु किरन (2016) – "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत अ.जा. वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक

अभिरुचि का समीक्षात्मक अध्ययन" (सतना जिले के विशेष सन्दर्भ में), शोध प्रबन्ध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
8. त्रिपाठी, डॉ. लोकेश (2014) : अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Research in Social Sciences and Humanities, Vol. No. 4, Issue No. I, 144-152.
9. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, सीधी, 2015, पृ. 6.